B.A. Part - II Hons - Philosophy
IIIrd paper - Ethics

"Explain and examine Perfectionism or Eudaemonism as a moral theory."

"नैतिक सिद्धांत के रूप में आत्मपूर्णतावाद की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए।"

मनुष्य की भावना अंधी होती है और उसका विवेक कठोर होता है। इन दोनों अंगों को समुचित महत्व देना आवश्यक है। इन दोनों अंगों के विकास का अर्थ 'स्व' (Self) का विकास है। आत्मपूर्णतावाद (Perfectionism) इसी आवश्यकता की पूर्ति करता है। यह वह नैतिक सिद्धांत है जिसके अनुसार आत्मोन्नति, आत्मविकास और आत्मलाभ अथवा आत्मसाक्षात्कार (self-realisation) ही जीवन का चरम लक्ष्य (ultimate aim)। P.B. Chatterjee ने कहा है कि - "The theory is called Perfectionism because it holds up an ideal of mental perfection to be realised by the self's own effort." अर्थात "यह सिद्धान्त इसलिए आत्मपूर्णतावाद कहलाता है, क्योंकि यह अपने प्रयत्न से आत्मिक पूर्णता के आदर्श को स्वीकार करता है।"

नैतिक सिद्धांत के रूप में आत्मपूर्णतावाद (Perfectionism As a Moral Theory) - की व्याख्या इस प्रकार करते हैं। सुखवाद भावना का नीतिशास्त्र है, बुद्धिवाद बुद्धि का और आत्मपूर्णतावाद व्यक्तित्व का नीतिशास्त्र है। इस प्रकार आत्मपूर्णतावाद के अनुसार अपने व्यक्तित्व को विकसित कर पूर्ण बनाना ही जीवन का चरम लक्ष्य है। आत्मपूर्णतावाद को आत्मप्रसादवाद (Eudaemonism) भी कहा जाता है। यूडेमोनिज्म (eudaemonism) शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द 'यूडेमोनिया' अर्थात आत्मप्रसादवाद

आत्म-संबंधी ये दोनों विचार एकांगी है ये दोनों विचार आत्मा के अंग विशेष से संबद्ध है परन्तु आत्मपूर्णतावाद (Perfectionism) के अनुसार आत्मा इंद्रियमय तथा बुद्धिमय दोनों है और संपूर्ण एवं शुद्ध आत्मा की सिद्धि ही चरम लक्ष्य है इसके अनुसार आत्मा इंद्रियपरता और बुद्धि का आवश्यक सुन्दर संयोग है आत्मा एक अनश्वर आध्यात्मिक तत्व है जिसमें बुद्धि इंद्रियपरता को नियंत्रित रखती है। इस प्रकार आत्मपूर्णतावाद द्वारा एवं समग्र आत्मा अर्थात् इंद्रियमय और बुद्धिमय दोनों की पूर्णता को ही चरम आदर्श मानता है।

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है कि मनुष्य के भीतर उच्च और हीन दो प्रवृत्तियाँ रहती है हीन प्रवृत्ति इंद्रियमय एवं वासनामय है और उच्च प्रवृत्ति विवेकमय एवं बुद्धिमय। जब तक व्यक्ति इंद्रिय एवं वासनाओं का गुलाम रहता है तभी तक उसके हितों में विरोध करता है वासनाओं अथवा इच्छाएँ अपनी तृप्ति के लिए व्यक्ति को प्रेरित करती है और इस प्रकार उसे अन्य व्यक्तियों के हितों का विरोध करता पड़ता है परन्तु जब व्यक्ति बुद्धि द्वारा इन वासनाओं एवं इच्छाओं पर नियंत्रण करता है तब इसके निजी हित और दूसरों के हितों में कोई विरोध नहीं रह जाता है आत्मपूर्णतावाद के अनुसार भावना और बुद्धि दोनों ही मानव-स्वभाव के अनिवार्य तत्व है आत्मपूर्णतावाद सुख और आनंद में अंतर मानता है।

Dr. Ajay Kumar Sinha
Deptt. of Philosophy
Mahila College Dalmianagar
Dehri-on-Sone Rohtas

अनुसार संपूर्ण आत्मा का कल्याण अथवा संपूर्ण व्यक्तित्व की पूर्णता परम लक्ष्य है यही धारणा आत्मपूर्णतावाद की है।

आत्मपूर्णतावाद की मान्यताएँ :-

आत्मत्याग के द्वारा आत्मसाक्षात्कार केवल आत्मोत्सर्ग द्वारा संभव है बुद्धिमय आत्मा के विकास के लिए पाशविक आत्मा का उत्कर्ष आवश्यक है मैकेंजी के शब्दों में - "हमारे लिए सच्ची आत्मा अथवा संपूर्ण शुभ की उपलब्धि केवल सामाजिक लक्ष्यों की सिद्धि के द्वारा ही संभव है ऐसा करने के लिए हमें अपनी वैयक्तिक आत्मा का निषेध करना होगा जो सच्ची आत्मा नहीं है इस आत्मोत्सर्ग द्वारा आत्मलाभ करना होगा। आत्मा का परम कल्याण व्यक्तिगत हित और सामाजिक हित दोनों है आर्नल्ड सेठ के शब्दों में - "जब व्यक्ति अपनी संकीर्ण व्यक्तिगत विशेष आत्मा से ऊपर उठकर समुदाय को कुटुंब, संप्रदाय, राज्य और मनुष्यजाति के अधिक व्यापक और संपन्न जीवन से एकाकार कर देता है, तब विश्वव्यापी जीवन की शक्ति अव्यक्त से व्यक्त हो जाती है।" ग्रीन महोदय ने कहा है कि - "मनुष्य कभी अपने को अच्छी दशा में अपने विकास के मार्ग पर नहीं सोच सकता, जब तक वह दूसरों को विकास के मार्ग के साधन रूप में नहीं, बल्कि उसके हिस्सेदार के रूप में सोचे।"

आत्मा का पूर्ण एवं ठोस स्वरूप - सुखवाद

आत्मा के विशुद्ध इंद्रियमय और उसकी तृप्ति को ही सर्वोच्च शुभ मानता है बुद्धिवाद आत्मा को विशुद्ध बुद्धिमय और उसकी सिद्धि को चरम आदर्श मानता है